Class - B.Com II
Subject - MFI
Paper - IV(5)
Topic - ~~Metallic~~ Metallic Money
Lecture - 26
By Dr C P Sahu
Marwari College Dar

classmate
Date
Page

Metallic Money धातु मुद्रा

(1)

प्राचीन काल में मुद्रा के रूप में प्रयोग की जाने वाले वस्तुओं और सेवाओं में एकरूपता का अभाव था लेकिन बाद में सोने और चाँदी को मुद्रा के रूप में प्रयोग होने लगा। उसी समय से सिक्के ढालने और उस पर विशेष चिन्ह देने की कला का विकास हुआ। सिक्कों की निर्माण की विधि अथवा ढलाई को टंकण कहा जाता है। इसी टंकण के कार्य को टकसाल भी कहते हैं। सिक्को के टंकण होने से एकरूपता होती है साथ ही इनकी पहचान आसानी से हो जाती है।

धातु मुद्रा के गुण या लाभ :—

(1) वास्तविक मूल्य - धातु मुद्रा में शुद्ध धातु की मात्रा प्रायः उसके मूल्य के बराबर होती है। अंकित मूल्य से कम मूल्य रहने के बावजूद धातु मुद्रा कागजी मुद्रा से कीमती होती है क्योंकि पत्र मुद्रा में कागज का कोई मूल्य नहीं होता।

(2) जनता को लाभ - सरकार द्वारा धातु मुद्रा का विमुद्रीकरण कर देने पर या रद्द घोषित कर देने पर भी जनता को कोई नुकसान नहीं होता है। क्योंकि जनता धातु मुद्रा को गलाकर और बेचकर मूल्य प्राप्त किया जा सकता है।

(3) मूल्य में स्थिरता - धातु मुद्रा के मूल्य में शीघ्र ही कमी या वृद्धि नहीं होता। धातु के मूल्य में अन्य वस्तुओं की तुलना में उतार-चढ़ाव कम होता है। जिससे धातु की बनी मुद्रा के मूल्य में स्थिरता बनी रहती है।

Scanned with CamScanner

classmate

Date ______
Page ______

(2)

(4) **प्रसार का भय नहीं** - इसके अन्तर्गत मुद्रा प्रसार का भय नहीं होता क्योंकि सरकार द्वारा उतनी ही धातु मुद्रा ढालता है जितना कि उसके पास उपलब्ध रहता है।

(5) **पुनः प्रयोग** - धातु मुद्रा के घिस जाने या खराब हो जाने पर उसे गलाकर पुनः मुद्रा बनाया जा सकता है।

(6) **अविनाशिता** - धातु मुद्रा शीघ्र समाप्त होने वाली नहीं है। इसपर वर्षा, गर्मी या अन्य प्राकृतिक कारणों का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

धातु मुद्रा के दोष अथवा हानि :-

(1) **भुगतान में कठिनाई** :- धातु मुद्रा में भुगतान करने पत्र मुद्रा की तुलना में काफी दिक्कत होती है। क्योंकि धातु मुद्रा छोटे-छोटे आकार का होता है जिससे भुगतान के समय गिनती करने में समय एवं श्रम दोनों की बर्बादी होती है।

Scanned with CamScanner

(3)

(2) खर्चीली - धातु महँगी होती है। इनके ढलाई में काफी खर्च आता है। इनके चलन में रहने से घिसावट आती है। अधिक खर्चीली होने के कारण अविकसित देशों के लिए लागू करना कठिन हो जाता है।

(3) वहनीयता कम - धातु मुद्रा वजनी होती है। इसे एक स्थान से दूसरे स्थान ले जाने पर कठिनाई होती है। बड़ी मात्रा में इसे ले जाना पर जोखिम पूर्ण भी है।

(4) अधिक स्थान लेती है - धातु मुद्रा अधिक स्थान घेरती है। इसे रखने में काफी दिक्कत होती है।

अच्छे मुद्रा-पदार्थ के गुण (Qualities of good money Material)

(1) एकरूपता - अच्छी मुद्रा के लिए यह आवश्यक है कि एक मूल्य की मुद्राएँ एक ही आकार-प्रकार का हो। इसके लिए सोना-चाँदी उपयुक्त पदार्थ है।

(2) ढलाउनपन - मुद्रा पदार्थ ऐसा हो जिसे आसा.

कतानुसार गलाकर नया रूप दिया जा सके। मुद्रा पदार्थ न तो अधिक कड़ा और न अधिक कोमल होना चाहिए जिसमें चित्र, मुहर अंकित किया जा सके।

(3) वहनीयता - एक अच्छी मुद्रा का महत्वपूर्ण गुण यह है कि वह वजन में हल्की होती है और मूल्य में अधिक। इस लिए सोना-चाँदी उपयुक्त धातुएँ हैं।

(4) टिकाऊपन - मुद्रा पदार्थ ऐसा होना चाहिए जो शीघ्र नष्ट न हो। अधिक टिकाऊ रहने वाला पदार्थ ही विनिमय शक्ति का संचय अधिक समय तक संचित कर सकता है।

(5) सर्वमान्य या सामान्य स्वीकृत - सरकार की मान्यता के साथ-साथ जनता का विश्वास भी मुद्रा में होना चाहिए जिससे लेन-देन में भुगतान सरलता से होते हैं। स्वर्ण और चाँदी में सामान्य स्वीकृत का गुण विद्यमान है।

(6) उपयोगिता - मुद्रा पदार्थ में आन्तरिक रूप से उपयो-

Scanned with CamScanner

सिक्का का होना आवश्यक है चाँदी तथा सोना में यह गुण अधिक पाया जाता है। प्रत्येक व्यक्ति अपने पास रखना चाहता है और इसकी माँग अन्तर्राष्ट्रीय भी होती है।

(7) पहचानता :- मुद्रा पदार्थ ऐसा हो जिसे आसानी से लोग पहचान सके। सोना चाँदी में यह गुण विशेष रूप से पाया जाता है। इसलिए मुद्रा के लिए यह उपयुक्त माना जाता है।

अतः उपर्युक्त गुणों पर ध्यान देने के बाद हम कह सकते हैं कि सोने-चाँदी में अन्य धातुओं की तुलना में ये गुण अधिक विशेष रूप से पाये जाते हैं। पीतल, तांबा, काँसा के सिक्कों का भी प्रचलन रहा है लेकिन एक आदर्श मुद्रा-पदार्थ के गुणों से पूर्ण नहीं रहा है। अब धातु मुद्रा मात्र सांकेतिक मुद्रा रह गयी है और इनमें कई प्रकार की धातुओं को मिश्रण करके बनाया जाता है।